Baba’s Praise

09/02/2015

- बाकी परमपिता परमात्मा का न आकारी, न साकारी रूप है इसलिए उनको **शिव परमात्माए** नम: कहा जाता है । **ज्ञान का सागर** वह एक ही है ।

- तो बाप **आकर जगाते** हैं-हे सजनियां हे भक्तियां जागो । सभी मेल अथवा फीमेल भक्तियां हैं । भगवान को याद करते हैं । सभी ब्राइड्स याद करती है एक **ब्राइडग्रूम** को । सभी आशिक आत्मायें **परमपिता परमात्मा माशूक** को याद करती हैं । सभी सीताये हैं, **राम एक परमपिता परमात्मा** है । राम अक्षर क्यों कहते हैं? रावणराज्य है ना ।तो उसकी भेंट में रामराज्य कहा जाता है । **राम है बाप**, जिसको **ईश्वर** भी कहते हैं, **भगवान** भी कहते हैं । असली नाम उनका है **शिव**

- इस समय बाप आकर तुम बच्चों को **अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान** देते हैं । कहते हैं तुम भी औरों को दान देते रहो तो 5 विकारों का ग्रहण छूट जाए ।

- सिवाए मेरे तुम बच्चों को रावण राज्य से, दुःख से कोई भी **लिबरेट** कर नहीं सकते ।सभी काम चिता पर बैठ भस्म हो पड़े हैं । मुझे आकर **ज्ञान चिता पर बिठाना** पड़ता है ।

- मनुष्य स्वच्छ बुद्धि से बिल्कुल तुच्छ बन जाते हैं । अब बाप तुमको **स्वच्छ बुद्धि बनाते** हैं । स्वच्छ बनते हो याद से ।

- यह है **ऊंच ते ऊंच पढ़ाई**, जिससे तुम्हारी कितनी **ऊंच कमाई** होती है ।

- बाप बिगर **जीवनमुक्ति** कोई दे ही नहीं सकते । आत्मायें आती रहती हैं फिर वापस कैसे जायेंगे? बाप ही आकर सर्व की **सद्गति** कर वापिस ले जायेंगे ।

- अपने को ब्रह्म ज्ञानी, तत्व ज्ञानी कहते हैं । समझते हैं हम ब्रह्म में लीन हो जायेंगे । बाप कहते हैं यह सब रांग है । **राइट तो मैं हूँ, मुझे ही ट्रुथ कहा जाता है ।**

- वह आशिक-**माशूक** होते हैं एक-दो के । यहाँ तो सब आशिक हैं एक माशूक के । उनको ही सब याद करते हैं । वंडरफुल **मुसाफिर** है ना । इस समय आये हैं सब दुखों से छुड़ाकर **सद्गति** में ले जाने लिए । उनको कहा जाता है **सच्चा-सच्चा माशूक** ।